ISBN 978-93-5346-8024

रयत शिक्षण संस्थेची वाटचाल आणि पद्मविभूषण मा. शरदरावजी पवारसाहेब यांचे देशाच्या विकासातील मौलिक योगदान

संपादक : प्राचार्य डॉ. गणेश ठाकूर

रयत शिक्षण संस्थेचे

महात्मा फुले कला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय,

पनवेल, जि. रायगड – ४१० २०६

नॅक पुनर्मूल्यांकनात 'अ' दर्जा • मुंबई विद्यापीठाचा उत्कृष्ट महाविद्यालय पुरस्कार

मा. शरद पवार साहब का सुधारवादी दृष्टिकोण

डॉ. संगिता चित्रकोटी
अध्यक्ष, हिंदी विभाग
लक्ष्मी -शालिनी महिला महाविद्यालय पेझारी

मा. शरद पवार साहब के प्रति मुझे कॉलेज जीवन से ही आदरयुक्त आकर्षण रहा है। मैं बारामती के टी.सी. कॉलेज की छात्रा हूँ। जब वे हेलिकॅप्टर से बारामती आते तो कॉलेज के नजदीक ही मैदान में उनका हेलिकॅप्टर उतरता था। हम उन्हें बस एक झलक देखने के लिए वहाँ जाते थे। बडी महान हस्ती को देखने पर मन संतुष्ट हो जाता था। एक बार आदर्श गाँव योजना की पत्रिका में स्वर्गीय बापू साहब देशपांडे जी ने मुझे विनोबा भावे का एक लेख मराठी से हिंदी में प्रकाशित करने हेतु अनुवादित करने के लिए कहा था। जब पत्रिका छपकर आई तो मैनें देखा उसमें पवार साहब का भी लेख है। डर और खुशी दोनों का मिलाजुला भाव मेरे मन में उमड़ रहा था। और अब अनायास ही महात्मा फुले कॉलेज पनवेल व्दारा आयोजित कार्यशाला में पवार साहब पर शोधालेख लिखने के लिए मुझे कहा गया। सच कहूँ तो इतनी मेरी योग्यता कदापि नहीं कि उनपर दो शब्द लिखू। उनका कार्य व्यापक आदर्श और महान है अत: उनपर कलम चलाना कार्यशाला की अनिवार्यता है।

मा. शरद पवार एक शक्ति ही नहीं सभी के लिए एक स्फुर्ति केंद्र है, एक प्रेरणा स्थान है। सखोल ज्ञान, गाढा अध्ययन, अनुभव और अनुकरण के संयोग से बना यह व्यक्तित्व अधिक प्रौढ और परिपक्व है। उनकी यशस्वी जीवनयात्रा संघर्ष, साहस, शौर्य की तेजस्वी गाथा है। महाराष्ट्र भूमि का यह तेजस्वी हिरा देश-विदेश में अपने कार्य कर्तृत्व से छा गया। १२ दिसंबर १९४० में बारामती तहसिल के काटेवाडी नामक छोटेसे गाँव में किसान परिवार में जन्मे शरद पवार ने महाविद्यालयीन जीवन में प्रवेश किया। उसी समय वे सार्वजनिक जीवन में भी कार्यरत हुए। घर से मिले हुए संस्कार और आसपास की परिस्थिति शरद पवार जी के लिए अनुकूल थी इसलिए वे एक एक कदम आगे बढाते हुए सफलता की सीढियाँ चढते गए। स्कुल कॉलेज में उनका ध्यान पढाई से जादा खेल और सांस्कृतिक कार्यक्रमों की ओर ही अधिक था। खो-खो, कबड्डी, जैसे खेलों मे वे माहिर थे। खेल से मनुष्य में अनुशासन संयम, साहस, नेतृत्व, संघशक्ति, एकता आदि गुणों का निर्माण हो जाता है। अत: शरद पवार साहब में भी ये गुण अनायास ही वृध्दिंगत हुए। जिससे भावी जीवन की रुपरेखा तैयार हो गई। प्रारंभ में विद्यार्थी कार्यकर्ता, युवा कार्यकर्ता, विधायक, युवक कॉंग्रेस के महासचिव "कोरम फॉर सोशालिस्ट ॲक्शन" दल के महाराष्ट्र शाखा के अध्यक्ष, कॉंग्रेस पार्टी के महासचिव, राज्यमंत्री, मुख्यमंत्री, विरोधी पक्ष नेता, कृषिमंत्री और रक्षामंत्री आदि कई पदोंपर आरुढ हो गए उन्होंने "हम होंगे कामयाब एक दिन" का गीत गाते हुए कामयाबी की उत्तुंग मंजिल हासिल की। जनता के मन में अपना ऐसा दृढ स्थान बना लिया है कि वहाँ से वे कभी पदच्युत नहीं होंगे।

पवार साहब आज महाराष्ट्र की राजनीति के बादशहा है। राजनीति के क्षेत्र में यह मुकाम उन्हें यू ही हासिल नहीं हुआ। उन्होंने राजनीति के साथ विधायक विचारों की कृति को जोड दिया। बारामती इंदापुर के आसपास के प्रदेश में विकासात्मक परिवर्तन देख कर हम हक्काबक्का रह जाते है। शारदा नगर और एम आय डी सी में शैक्षिक संकूल गाँव देहांतो के बच्चे पढे इसलिए खडे किए है। वे महज शैक्षिक संकुल नही मिनी युनिव्हर्सिटी हैं। बच्चों को पढने के लिए हर सुविधा प्रदान करने की सफल कोशिश वहाँ की है। कोरी किताबी पढाई नहीं बल्कि क्रीडा, कृषि, तकनिकी सांस्कृतिक आदि क्षेत्रों में भी विद्यार्थी आगे बढें इस दृष्टि से छात्रों को प्रोत्साहन दिया गया हैं।

बारामती अकालग्रस्त तहसिल है। सतत अकाल से जनता त्रस्त हो गई थी। १९६३ में महाराष्ट्र में बडा अकाल पडा। अकाल की गंभीर परिस्थिति देखकर शरद पवार साहब व्यतिथ हुए। वैसे भी वे बारामती के अकालग्रस्त क्षेत्र को लेकर चिंतित थे ही। किसानों का दु:ख, वेदना आदि समस्याओं को लेकर परेशान हो गए। इस गंभीर परिस्थिति पर जीत हासिल करने हेतु उनका विचार मंथन जारी था। अपने समविचारी दोस्तों को साथ लेकर उन्होंने कुछ योजनाएँ और नीतियाँ बनाई। खेती के लिए पानी, खेती पूरक लघु उद्योग, कुटीर उद्योगों को बढावा दिया। वैज्ञानिकों से विचार विमर्श के बाद उन्होंने बारामती में खेती के विकास की नींव रखी। कृषी क्षेत्र में विज्ञान को महत्वपूर्ण भूमिका पर बल देते हुए उन्होंने रिझनेवाला तालाब (जलाशय) की योजना बनाई।

इसी समय एक आशा की किरण उन्हें दृष्टिगत हुई। इ.स. १९२५ मे मिशनरी लोग अकाली क्षेत्र में इन्सानियत के नाते अनाज, कपडे आदि जरूरत की चीजें लोगों में बाँट देते थे। मिस टयूस और मिस ओझर चर्च की प्रमुख थी। शरदराव उनसे मिले। उनके द्वारा किए जानेवाले मानवता के कार्य की स्तुति कर धन्यवाद ज्ञापित किया परंतु शरदरावने एक विचार उनके सामने रखा कि वे अकाल को जड से मिटाने के लिए मदद क्यों नहीं करते ?। मिस टयूस और मिस ओझार दोंनों महिला शरदराव से प्रभावित हुई और उन्होंने शरदराव से मदद देने का वचन दिया। चर्च की आर्थिक मदद, गाँववालों का श्रम और शरदराव के दृढ ध्येयवादी विचारों से तांदुळवाडी का पहला रिझनेवाला तालाब (जलाशय) खडा हुआ।

फूड फॉर वर्क का तत्व शरदराव जी ने प्रथमतः कृति में उतारा। सरकार की मदद के बिना जनशक्ति के श्रमदान से बारामती में नवोदय का उषःकाल हो गया। बस फिर आगे वे न रूके न थके ३०० से ज्यादा जलाशयों की निर्मिति उन्होंने बारामती और आसपास के क्षेत्र में की। अकाल सदृश्य परिस्थिति में एकदम परिवर्तन आ गया। कुएँ पानी से लबालब भरे और खेती हरीभरी हो गई। किसानों के चेहरे खुशी से खिल गए। उनमें आनंद, उत्साह और आत्मविश्वास निर्माण हो गया। कृषि विकास के लिए उन्होंने किसानों को खाद, किटकनाशक दवाएँ, संकरित बीज, और बैंको द्वारा कर्जे की व्यवस्था की। पवार साहब के कल्पना, अथक प्रयास और अविश्रांत परिश्रम से हरित क्रांति का बीजारोपण हुआ। "केल्याने होत आहे रे आधी केलेची पाहिजे" यह उक्ति उन्होंने सार्थ की।

२२ मई २००४ में कृषि मंत्री पद की बागडौर उन्होंने हाथ में ली और प्रथमतः किसानों का कर्जा माफ किया। ३ करोड ६९ किसान लाभान्वित हुए। खेती ऋण का ब्याज धीरे धीरे १२ प्रतिशत से ४ प्रतिशत कर दिया। कृषि व्यवसाय नए रूप में विकसित होने लगा। गेहूँ और गन्ने के उत्पादन में बढोत्तरी करने के लिए उन्होंने 'पायलट योजना' शुरू की। दुग्ध व्यवसाय, कुक्कुट पालन, वराह पालन, मत्स्योद्योग इत्यादी लघुउदयोग कुटीर उदयोंगों को प्रोत्साहन दिया। कृषि विकास के लिए उन्होंने किसानों को प्रोत्साहित किया। कर्तृत्ववान और कर्तबगार किसानों को "कृषिनिष्ठ किसान" के रूप में गौरवान्वित किया। महाराट्र में कृषि उत्पादन में बढोत्तरी हुई, कृषि पुरक व्यवसाय भी तेजी में चलने लगे। 'जहाँ घर वहाँ संकरित गाय और जहाँ गाँव वहा सहकारी दुग्ध संस्था' का सूत्र पहले बारामती तत् पश्चात संपूर्ण राज्य में यह मॉडल शुरु किया। परिणामतः दुग्ध व्यवसाय में वृध्दि हुई। संक्षेप में हरितक्रांति का सपना साकार होने लगा। सर्वतोपरि किसानों को मदद करने वाले पवारजी ने मात्र १० साल में देश को कृषि महासत्ता देश बनाया। भारत माँगनेवाले देशों से देनेवाला देश बना। इस समय कृषि उत्पादन बढोत्तरी का दस्तर १.८ से ३.५ : पर गया। कृषि में उनकी रुची, प्रयास, ज्ञान और नीतियों के कारण ही यह संभव हुआ। कृषि क्षेत्र में किए हुए आमुलाग्र परिवर्तन के कारण उन्हें "दूसरी हरितक्रांती के जनक" संबोधित किया जाता हैं

महिलाओं के लिए शिक्षा और विकास के द्वार महात्मा फुले, सावित्रीबाई फुले और डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के कारण खुल गए। उनके कार्य को सही मायने में आगे ले जाने का कार्य पवार साहब ने किया। महिलाओं को सामाजिक, राजनीतिक नेतृत्व करने का अवसर प्रदान कर समाज में उन्हें उँचा उठाने की कोशिश की। १९९३ में राज्य में महिलाओं को स्थानिय स्वराज्य संस्था चुनाव में ३० प्रतिशत आरक्षण देने का निर्णय उन्होंने लिया। २०११ में ५० प्रतिशत आरक्षण महिलाओं को दिया। चार दिवारों के अंदर घुटघुट कर जीवन जीनेवाली स्त्रियों को "समान अवसर समान सत्ता" के तत्वानुसार गाव तहसिल जिल्हे के स्तर पर काम करने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

केंद्रीय रक्षामंत्री पद के सूत्र संभालने के बाद उन्होने महिलाओं को सैन्यदल में प्रवेश देने का ऐतिहासिक निर्णय लिया। रक्षा क्षेत्र में महिलाओं को ११ प्रतिशत आरक्षण का उनका क्रांतिकारी निर्णय सिध्द हुआ। आज रक्षा क्षेत्र में महिला देशसेवा करने में अग्रेसर है। महिलाओं को हवाइ दल और पुलिस दल में भी प्रवेश देने का निर्णय उन्होंने लिया। जिससे अनेक स्त्रियां अपने पैरों पर खडी है। स्वावलंबी होकर स्वाभीमान से अपनी और अपने परिवार की आजीविका चला रही है। महिला सक्षमीकरण और सशक्तिकरण के लिए पवार साहब ने 'बचत समूह आंदोलन' प्रारंभ किया महिला बचत समूह को मात्र ४ प्रतिशत ब्याज से कर्जा देने का फैसला लिया और बचत समूह को मार्केट भी उपलब्ध करा दिया। घर संभालकर घर में बैठें-बैठें स्त्रियाँ छोटे व्यवसायों से आर्थिक दृष्टि से सक्षम हो गई। घर के बाहर ही नही घर में भी स्त्री को प्रतिष्ठा देने की कोशिश उन्होंने की। घर की प्रमुख (परिवार की प्रमुख) स्त्री होगी यह तत्व को उन्होंने कृति में उतारा। परिवार में उसे बराबर का दर्जा देने की कोशिश उन्होंने की। कोई भी जमीन घर आदि की खरिददारी में पति के साथ पत्नी का भी नाम लगाना कानूनन बंधनकारक किया। इसलिए निर्णय प्रक्रिया में स्त्रियों का सहयोग और सहभाग बढ गया।

पवार साहब ने 'राष्ट्रवादी युवती कॉंग्रेस' महाराष्ट्र में स्थापना की। जिसकी बागडौर उनकी बेटी खासदार सुप्रिया सुलेजी ने संभाली। 'राष्ट्रवादी युवती कॉंग्रेस' के माध्यम से स्त्रीभ्रूणहत्या, बालविधवा, स्त्रीशिक्षण, आदि विषयों पर "जागर जाणीव अभियान" शुरू किया। युवतियों का सहभाग इस अभियान में लेकर उन्हें स्त्री समस्याओं से परिचित कराया।

"आधी केले मग सांगितले" इस उक्ति का अनुसरण करनेवाले पवार साहब ने स्वयं बिना दहेज की शादी की। बेटी सुप्रिया का जन्म होने पर उन्होंने स्वयं परिवार नियोजन की शस्त्रक्रिया कर समाज के सामने एक आदर्श रखा। एक बेटी पर ही स्वयं शस्त्रक्रिया करनेवाले पवार साहब ने समाज में व्याप्त बेटा ही वंश का दिया जैसे दकियानुसी विचारों को तिलांजली दी। बेटा-बेटी एक समान का आदर्श उच्च विचारों को उन्होंने अपने कृति से लोगों के सामने रखा। इसलिए पवार साहब समाज के सामने एक रोल मॉडल बनते है।

पवार साहब को सदा ही खेल और कला से प्रेम रहा है। उनकी गर्भनाल खेल से कभी टूटी नही। कुशल क्रीडा संघटक के रुप में वे विख्यात हैं। राज्य कुश्ती परिषद कें अध्यक्ष भी रह चुके हैं। उन्ही के कालावधी में महाराष्ट्र केसरी कुश्ती प्रतियोगिता को प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। खो खो खेल को भी प्रतिष्ठा देने में उनका बडा योगदान है। इसलिए पवार साहब का जन्मदिन खो खो दिन के रुप में मनाया जाता है। १९९० साल में बिजिंग मे संपन्न हुए एशियायी प्रतियोगिता में कबड्डी का समावेश हो गया। उसका सारा श्रेय जाता है पवार साहब को। १९९३ में पुणे में राट्रीय क्रीडा कार्यक्रम का आयोजन हुआ था। उस समय महज ११ महिने में

'शिवछत्रपती क्रीडानगरी'का निर्माण उन्होंने किया। क्रिकेट में उन्हे काफी दिलचस्पी थी। राजनीति के साथ साथ क्रिकेट जगत में भी वें उच्च पद पर आसनस्थ हुए। भारतीय क्रिकेट नियंत्रण बोर्ड के वे अध्यक्ष बने बाद में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट बोर्ड के भी अध्यक्ष बने। क्रिकेट के मैदान में लोकप्रिय आयपीएल प्रतियोगिता शुरु करने का श्रेय पवार साहब को ही जाता है। इसलिए उन्हे आयपीएल का जनक भी कहा जाता है। आयपीएल के हर मिटींग में साहब फाइलों के साथ आते थे। हर फाइल का सूक्ष्म अध्ययन करते थे। सूक्ष्म निरीक्षण व व्यापक दृष्टि के परिणामस्वरुप ही आयपीएल का प्रारंभ हो सका। इसप्रकार पवार साहब राजनीति के साथ साथ खेल के मैदान के भी बाजीगर बन गए।

लातुर के पास किल्लारी गाँव में भूकंप हुआ पवार साहब तक रात ३ बजे खबर पहुँची। साहब प्रात: ६ बजे किल्लारी पहुँचें। वहाँ मृत्यु का तांडव देखकर उनका दिल दहल गया। लगभग १०,००० लाशों का ढेर पैरों तलों की जमीन खिसकने लगी। जिंदा बचे लोगों को ढाढस बाँधकर वैद्यकीय सेवा तात्काल मँगवाई। भोजन, पानी की और आवास की व्यवस्था की। पवार साहब स्वयं ३ महिने वहाँ रहे। वहाँ के लोगों का पुनर्वसन किया। आज वहाँ के लोग आनंद और सम्मान के साथ अपना जीवन जी रहे हैं। दुसरों के चेहरे पर खुशी देखना इससे अधिक सुख दुसरा कौनसा हो सकता है। जनसेवा ही ईश्वर सेवा व्रत का पालन करनेवाले पवार साहब का कार्य देखकर ईश्वर ने भी कहा अभी और काम बाकी है। इसलिए कैंसर की लडाई पर वे जीत हासिल कर सकें। डॉक्टरों ने कैंसर का निदान होने पर कहा था ६ महिने ही बची है जिंदगी। परंतु पवार साहब ने कहा आप अपना इलाज कीजिए। अपनी मजबूत इच्छाशक्ति के बल पर कैंसर के खिलाफ लंबी लडाई लडी और उस पर जीत भी हासिल की । पवार साहब खुद कहते है कि मैं कैंसर के खिलाफ जंग इसलिए जीत सका क्योंकि इस बीमारी से लडने की मेरी इच्छाशक्ति बहुत प्रबल थी। यदि मैंने लडाई में हार मान ली होती या काम करना बंद कर दिया होता तो कैंसर जीत जाता। सशक्त मन, सशक्त बुद्धि हमेशा सकारात्मक उर्जा तैयार करती है। इसी उर्जा से उन्होंने अनेक शिखरों को सर किया और देशविदेश में अपना अनन्य साधारण स्थान बना लिया ऐसी महान विभूति को जनमदिन के शुभअवसर पर "शतंजीव शरदो वर्धमान:" की हार्दिक शुभेच्छा।

•••